By:- Sujata Kumari
Dept. of History
T.N.C. Madhubani

एक योद्धा और साम्राज्य निर्माता के रूप में चन्द्रगुप्त मौर्य का मूल्यांकन

(Make an assessment of Chandragupta Maurya as an empire builder and fighter.)

ईसा पूर्व चौथी शताब्दि में मगध साम्राज्य की बागडोर नंदवंश के हाथों में चली गई। नंदवंश के अंतिम शासक धनानन्द के समय भारत को पश्चिमोत्तर सीमा पर सिकन्दर का आक्रमण हुआ और सिकन्दर के विजय के परिणामस्वरूप उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रांत के अनेक ~~सीमाओं~~ गणराज्यों का अंत हो गया और वहाँ यूनानी शासन व्यवस्था लागू हो गयी। परन्तु, 323 ई० पूर्व में सिकन्दर की अचानक मृत्यु हो जाने से यह समस्त व्यवस्था छिन-भिन्न हो गयी और यूनानी शासक के विरुद्ध चारों ओर विरोध की आग भड़क उठी और ~~इसलिए~~ भारत ने यूनानी परतंत्रता का जुआ उतार फेंका। इस विद्रोह और क्रांति का नेतृत्व चन्द्रगुप्त मौर्य ने किया और मगध में मौर्य वंश की स्थापना हुई।

चन्द्रगुप्त मौर्य का जीवनवृत

* 1 चन्द्रगुप्त मौर्य का प्रारम्भिक जीवन:— चन्द्रगुप्त मौर्य का जन्म 345 ई० पूर्व में हुआ था। इसके पिता संभवतः अपने राज्य में शत्रुओं द्वारा भगाये जाने पर पाटलिपुत्र के समीप आकर रहने लगे थे। चन्द्रगुप्त के पिता ने नंद राजा की सेवा में नौकरी कर ली। परन्तु नंद राजा और चन्द्रगुप्त के पिता में अनबन होने पर नंद राजा ने चन्द्रगुप्त के पिता को मरवा डाला। उस समय चन्द्रगुप्त माँ के गर्भ में थे। चन्द्रगुप्त की माँ छिपकर पाटलिपुत्र में ही बनी रही।

जब चन्द्रगुप्त बड़ा हुआ तो उसने नंद राजा की सेना में नौकरी कर ली। अपनी योग्यता एवं साहस से वह सेना का उच्च अधिकारी बन गया। वह जनता में लोकप्रिय हो गया जो कि नंद शासक को अच्छा नहीं लगा और उसने चन्द्रगुप्त की हत्या करवाने की सोची। चन्द्रगुप्त को इस बात का पता लग गया और वह पाटलिपुत्र से भाग गया। इस घटना ने चन्द्रगुप्त मौर्य के मस्तिष्क में नंदवंश को समाप्त करने का दृढ़ निश्चय उत्पन्न कर दिया।

*2. चाणक्य से मित्रता:— इसी समय चन्द्रगुप्त की मित्रता चाणक्य नामक एक विद्वान ब्राह्मण से हुई। चाणक्य का भी नंद राजा के द्वारा घोर अपमान हो चुका था। इस पर चाणक्य ने भी नंदवंश का अंत करने की प्रतिज्ञा कर रखी थी। चन्द्रगुप्त मौर्य को उसकी योजना में उसको सहयोग देने वाला साथी मिल गया।

*3. नंदवंश के विरुद्ध विद्रोह - आग भड़काना:— चन्द्रगुप्त एवं चाणक्य ने नन्द राजा के विरुद्ध विद्रोह भड़काना तथा नंद राजा को पराजित करने के साधन जुटाना आरम्भ कर दिया। तैयारियाँ पूरी करने के बाद उन्होंने मगध पर आक्रमण कर दिया, जिसको नंद राजा ने पूरी तरह विफल कर दिया।

*4. सिकन्दर की सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न:— नंद राजा पर आक्रमण करने के लिए चन्द्रगुप्त मौर्य सिकन्दर के पास गया। परन्तु चन्द्रगुप्त के स्वतंत्र विचारों के कारण सिकन्दर उससे अप्रसन्न हो गया और उसे मरवाने की आज्ञा दे दी परन्तु चन्द्रगुप्त वहाँ से किसी प्रकार निकल गया

अब तक तो उसने नंद राजाओं के साथ-साथ यूनानियों को भी भारत से खदेड़ने का निश्चय कर लिया।

*5. मगध राज्य पर आक्रमण:- पंजाब को अपने अधिकार में करने के बाद उसने मगध राज्य पर आक्रमण कर दिया और उसकी सेना आगे बढ़ती हुई पाटलिपुत्र के निकट पहुँच गई। नंद राजा धननंद की पराजय हुई और वह युद्ध में मारा गया। अब 322 ई०पूर्व में चन्द्रगुप्त मगध के सिंहासन पर बैठ गया और चाणक्य ने उसका राज्याभिषेक कर दिया।

*6. पश्चिमी भारत के प्रदेशों पर विजय:- चन्द्रगुप्त मौर्य ने पश्चिमी भारत में सौराष्ट्र के सभी प्रदेशों पर भी विजय प्राप्त की।

*7. दक्षिण भारत पर विजय:- अधिकांश विद्वानों के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य ने दक्षिणी भारत पर भी अधिकार किया था। अशोक का साम्राज्य मैसूर तक फैला हुआ था। चूँकि अशोक ने कलिंग के अतिरिक्त अन्य किसी प्रदेश पर विजय प्राप्त नहीं की, इसलिए दक्षिण भारत की विजय का श्रेय चन्द्रगुप्त को दिया जा सकता है।

*8. सेल्यूकस से संघर्ष:- भारत के विभिन्न प्रदेश जीतने के पश्चात, चन्द्रगुप्त का युद्ध सिकन्दर के सेनापति सेल्यूकस निकेटर से हुआ। 305 ई०पूर्व में सिंधु नदी के तट पर चन्द्रगुप्त मौर्य तथा सेल्यूकस सेनाओं के बीच भीषण युद्ध हुआ जिसमें सेल्यूकस की पराजय हुई और विवश होकर उसको चन्द्रगुप्त से संधि करनी पड़ी। सेल्यूकस ने अपनी पुत्री हेलन का विवाह चन्द्रगुप्त के साथ कर दिया।

*9. मृत्यु :- चन्द्रगुप्त मौर्य ने लगभग 24 वर्ष शासन किया। प्रारम्भ में वह ब्राह्मण धर्मावलम्बी था, पर अपने जीवन के अंतिम वर्षों में उसने जैन धर्म अपना लिया, फिर भी अन्य धर्मों के प्रति वह उदार और सहिष्णु था। अंत में उसने जैन साधु की भाँति उपवास और तप करके देह त्याग दी।

—— : मूल्यांकन : ——

डा. राधा कुमुद मुकर्जी के अनुसार - मौर्य साम्राज्य का आगमन भारतीय इतिहास की एक अपूर्व घटना है। जिस कठिन समय में इस वंश ने अपनी नींव को दृढ़ किया, उस समय को देखकर तो सचमुच इसका स्थान बहुत ऊँचा हो जाता है। वह समय संकट का था और सिकन्दर का भारत पर आक्रमण हो चुका था"

डा. वी. ए. स्मिथ के अनुसार :- "मौर्यों के आगमन के साथ इतिहास के क्षेत्र में भी प्रकाश की ज्वलन्त किरणें फैलने लगती। 18 वर्षों का लम्बा समय लगाकर चन्द्रगुप्त मौर्य ने मकदूनियाँ के सिपाहियों को भारत की सीमा से खदेड़, विशेषकर पंजाब और सिन्धु की भूमि से उन्हें बाहर धकेल दिया। सेल्यूकस की शक्ति को उसने क्षीण कर दिया और स्वयं उत्तरी भारत का निर्विवाद सम्राट बना। अरियाना प्रदेश के बहुत बड़े भाग पर भी उसका अधिकार था। ये सभी विशेषतायें उसे इतिहास के महानतम और सफल शासकों के बीच स्थान देती हैं।"

End